कक्षा–11 एवं 12

संस्कृत साहित्य–धारा
(इतिहास)

संस्कृत साहित्य–धारा

(इतिहास)

कक्षा 11वीं एवं 12 वीं के लिए

(एस.सी.ई.आर.टी. बिहार, पटना द्वारा विकसित)

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत।

राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार राज्य के निमित्त।

© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

प्रथम संस्करण : 2008

मूल्य : रु० 20.00

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि०, पाठ्य-पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा टेक्स्टबुक प्रेस, पटना-800001 द्वारा एच.पी.सी. के 70 जी.एस.एम. क्रीम वोम (वाटर मार्क) टेक्स्ट पेपर पर 5,000 प्रतियाँ 20.5 × 14 सेमी. साईज में मुद्रित।

प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार जुलाई 2007 से राज्य की उच्च माध्यमिक कक्षाओं (कक्षा - XI - XII) हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। नए पाठ्यक्रम के आलोक में भाषा की पुस्तकों का विकास एस० सी० ई० आर० टी०, पटना द्वारा तथा आवरण डिजाइनिंग एवं मुद्रण बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम के द्वारा किया गया है। यह पुस्तक उसी शृंखला की एक कड़ी है।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा (कक्षा - I - XII) के गुणवत्तापूर्ण सशक्तिकरण के लिए कृतसंकल्पित शिक्षा के समर्थ योजनाकार माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार, मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विभाग के प्रधान सचिव श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्ग-निर्देशन के प्रति हम कृतज्ञ हैं।

हमें आशा है कि यह पुस्तक राज्य की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के लिए ज्ञानोपयोगी सिद्ध होगी। एस० सी० ई० आर० टी० के निदेशक के हम आभारी हैं, जिनके नेतृत्व में इस पुस्तक को विकसित किया गया।

हमें आशा ही नहीं, पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत पुस्तक शिक्षार्थी के ज्ञानवर्धक एवं उपलब्धि-स्तर की वृद्धि में सहायक होगी। संवर्द्धन एवं परिष्करण की संभावनाएँ सदैव भविष्य की गोद में सुरक्षित रहती हैं। प्रकाशन एवं मुद्रण में निरंतर अभिवृद्धि के प्रति समर्पित बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

हसनैन आलम, भा० प्र० से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक
प्रकाशन निगल लि०

दिशा बोध

श्री हसन वारिस
निदेशक(प्रभारी)
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद बिहार

श्री रघुवंश कु
निदेशक (शैक्षणिक)
बिहार विद्यालय परीक्षा समिति

डॉ0 कासिम खुरशीद
विभागाध्यक्ष (प्रभारी)
भाषा शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
परिषद बिहार

श्री सैयद अब्दुल मोइन
विभागाध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण
परिषद बिहार

संस्कृत पाठ्य पुस्तक विकास समिति

अध्यक्ष

प्रो0 उमाशंकर शर्मा "ऋषि"
पूर्व विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग
पटना विश्वविद्यालय, पटना

संयोजक

डॉ0 सुरेन्द्र कुमार
व्याख्याता
राज्य शिक्षा शोध एवं
प्रशिक्षण परिषद, बिहार
पटना– 800006

सदस्य

(1) डॉ0 मधुबाला सिन्हा
व्याख्याता
धर्म समाज संस्कृत कॉलेज
रामबाग, मुजफ्फरपुर

(2) डॉ0 वीणा शर्मा
व्याख्याता
राघवेन्द्र संस्कृत कॉलेज
तरेत पाली, नौबतपुर, पटना

(3) डॉ0 शालिनी
व्याख्याता
एम0 एम0 कॉलेज , विक्रम
पटना

(4) डॉ0 दीपक कुमार
व्याख्याता
महाराजा कॉलेज, आरा

(5) डॉ0 उपेन्द्र पाठक
सर जी0 डी0 पाटलिपुत्र
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
कदमकुआँ, पटना

(6) डॉ0 रामनारायण सिंह
सहायक शिक्षक
श्री रघुनाथ प्रसाद बालिका
उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
कंकड़बाग, पटना– 8000020

(7) श्री महेश केवट
सहायक शिक्षक
राजकीय हसनपुर उच्च
विद्यालय, लखीसराय

बिहार विद्यालय परीक्षा समिति
(उच्चतर माध्यमिक) पटना द्वारा आयोजित समीक्षा संगोष्ठी के सदस्य

1. प्रो० रामविलास चौधरी – विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
2. डॉ० अशोक कुमार – स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना।
3. डॉ० सुरेन्द्र कुमार – व्याख्याता एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार पटना।

अकादमिक सहयोग

1. श्री इम्तियाज आलम, व्याख्याता एस० सी० ई० आर० टी०, बिहार पटना।
2. श्री देवेन्द्र प्रसाद, पूर्व प्राचार्य, उच्च विद्यालय परसा (सारण)।
3. डॉ. शान्ति कुमारी, शिक्षा संकाय, राँची विश्वविद्यालय, राँची।
4. श्रीमती बेबी कुमारी, राजकीय बालिका उच्च विद्यालय, महुआबाग पटना।
5. श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी, राज्य साधन सेवी, बी० ई० पी०, पटना।

प्राक्कथन

संस्कृत विश्व की एकमात्र जीवित भाषा है जिसमें साहित्य– रचना की धारा विगत चार सहस्र वर्षों से अनवरत प्रवाहित होती रही है। यों तो प्रत्येक भारतीय को अपनी इस साहित्यिक सम्पदा से परिचित रहना चाहिए किन्तु संस्कृत से सम्पर्क रखने वाले विद्वानों, छात्रों तथा अनुरागियों के लिए तो इसका सामान्य परिचय अत्यन्त अनिवार्य है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए संस्कृत वाङ्मय की अविरल धारा का संक्षिप्त परिचय देने के लिए प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गयी है और अर्थ के अनुरूप इसे 'संस्कृत –साहित्य–धारा ' नाम दिया गया है।

साहित्य का इतिहास किसी भाषा में विकसित साहित्य–रचना का अपने आकार के अनुरूप सामान्य या विशेष परिचय देता है। बड़े इतिहास–ग्रंथों में लेखकों, उनकी रचनाओं तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों का विशेष एवं समीक्षात्मक विवेचन किया जाता है जबकि छोटे आकार की पुस्तकों में इन बातों का सामान्य एवं संक्षिप्त परिचय मात्र दिया जाता है। दोनों ही प्रकार के ग्रन्थों की सामान्य उपयोगिता यह है कि पाठक को असंख्य मूल ग्रन्थों का अनायास परिचय ही नहीं, पढ़ने का आनन्द मिल जाता है। यही नहीं, उन्हें मूल रूप में देखने की अभिरुचि भी विकसित हो जाती है। इस दृष्टि से ' संस्कृत –साहित्य–धारा ' की महत्ता स्वयंसिद्ध है।

आज विज्ञान के असंख्य क्षेत्रों का विकास या विस्फोट हुआ है। किसी पाठक को इतना समय नहीं कि इस पूरे ज्ञान–विज्ञान के साहित्य को मूल रूप से देख सके। अतः उसकी रूप–रेखा (outline) मात्र से वह अपना काम चलाता है। भारतवर्ष की प्राचीन ज्ञान–सम्पदा जिन भाषाओं में सुरक्षित है उनमें संस्कृत का प्रमुख स्थान है। जिन लोगों की प्रवृत्ति उस सम्पदा से सामान्य परिचय पाने में है उनके लिए यह लघु पुस्तिका अत्यधिक उपयोगी होगी। अपने अनुकूल अध्यायों के विशेष लेखकों पर वे अपनी ज्ञानवृद्धि या ज्ञात का नवीकरण कर सकते हैं।

पाठ–परिष्करण की प्रक्रिया में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने 'संस्कृत साहित्य परिचय' नामक पुस्तक की प्रस्तुति उच्च माध्यमिक स्तर (+2) के विद्यार्थियों के लिए की जिसके संस्करणों के साथ इन पंक्तियों का लेखक सक्रिय रूप से जुड़ा रहा है । सन् 1999 ई0 में चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी से इस लेखक का 614 पृष्ठों का एक बृहत् ' संस्कृत साहित्य का इतिहास ' प्रकाशित हुआ जिसकी उपयोगिता अनेक विद्वानों तथा प्रतियोगिता परीक्षाओं के छात्रों ने स्वीकार की है। मेरे अनुभव का उपयोग करने का आमंत्रण देकर राज्यस्तरीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद् (SCERT) ने मुझे संस्कृत–सेवा का अभिनव अवसर प्रदान किया है। तदनुसार उपर्युक्त पुस्तकों के आलोक में संस्कृत–शिक्षकों के एक राज्य–स्तरीय दल ने

मेरे निर्देशन में प्रस्तुत संस्कृत–साहित्य–धारा का विकास किया है। इसका मुख्य उद्देश्य बिहार राज्य की उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए उपयुक्त पाठ्य–पुस्तक प्रदान करना है।

इस पुस्तक को विद्यालय–स्तरीय बनाने के लिए इसमें संस्कृत वाङ्मय की प्रमुख रचनाओं तथा उनके लेखकों का सामान्य , कहीं–कहीं सूचनात्मक , परिचय मात्र दिया गया है किन्तु साहित्य की रूप–रेखा की जानकारी उससे अवश्य हो जाएगी। वैदिक वाङ्मय तथा शास्त्रीय वाङ्मय से इसे सम्पुटित किया गया है, केवल साहित्य का ही इतिहास इसमें नहीं है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में सामान्य तथा वस्तुनिष्ठ प्रश्न भी दिये गये हैं जिनका अभ्यास विद्यार्थी कर सकते हैं, प्रश्न चुनने वालों को ईषद् दिशा–निर्देश भी उनसे मिल सकेगा – यह आशा है।

इस पुस्तक के विकास की प्रशासनिक व्यवस्था करने वाले राज्य शैक्षिक अनुसंधान तथा प्रशिक्षण परिषद् के अधिकारियों के प्रति मैं अत्यधिक कृतज्ञ हूँ। विशेष रूप से श्री हसन वारिश (निदेशक), श्री अब्दुल सईद मोईन (विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग) तथा श्री ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी तथा डॉ0 सुरेन्द्र कुमार पाल मेरे साधुवाद के पात्र हैं। डॉ0 पाल की प्रेरणा मुझे सक्रिय करने में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है।

जिन लेखकों ने इसके विभिन्न अध्यायों की प्रस्तुति की है उनमें डॉ0

मधुबाला सिन्हा, डॉ0 दीपक कुमार तथा डॉ0 (श्रीमती) शालिनी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। डॉ0 वीणा शर्मा ने सह–सम्पादन में सक्रिय भूमिका निभायी है। यह इन प्रतिभागियों तथा कुछ अन्य कर्मठ प्रतिभागियों का योगदान ही है कि केवल 10 दिनों की अल्प अवधि में यह इतिहास तथा बारहवीं कक्षा की पाठ्य–पुस्तक 'कौस्तुभः (द्वितीय भाग)' दोनों विकसित हो गये ।

सुधी विद्वानों, समीक्षकों तथा सहृदय अध्यापकों के समुचित परामर्श का हम सदा स्वागत करेंगे ।

डॉ. उमाशङ्कर शर्मा 'ऋषि'
अध्यक्ष
पाठ्य–पुस्तक विकास–समिति (संस्कृत)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार
समन्वयक
पाठ्य–पुस्तक विकास–समिति (संस्कृत)

विषयानुक्रमणिका

पृष्ठाङ्का :

प्राक्कथन		I - IV
प्रथम अध्याय	संस्कृत भाषा	1 -10
द्वितीय अध्याय	वैदिक साहित्य	11 -30
तृतीय अध्याय	आर्ष ग्रन्थ (रामायण, महाभारत एवं पुराण)	31 -40
चतुर्थ अध्याय	महाकाव्य	41-61
पञ्चम अध्याय	खण्डकाव्य, मुक्तक तथा स्तोत्र	62-74
षष्ठ अध्याय	गद्य–काव्य	75-86
सप्तम अध्याय	नीतिकथा–लोककथा	87-96
अष्टम अध्याय	चम्पूकाव्य	97-102
नवम अध्याय	रूपक साहित्य	103-117
दशम अध्याय	शास्त्रीय साहित्य	118-140
	सहायक ग्रन्थ–सूची	